

पाठ—26 शांतिदूत कृष्ण

शांतिदूत बनकर श्रीकृष्ण सात्यकि के साथ
हस्तिनापुर संधि प्रस्ताव लेकर गए।

दुर्योधन ने श्रीकृष्ण का स्वागत सत्कार किया और
भोजन का न्यौता दिया।

श्रीकृष्ण ने यह कहकर न्यौता अस्वीकार कर दिया
कि जिस उद्देश्य—पूर्ति के लिए मैं यहाँ आया हूँ
पहले वह पूरा हो।

श्रीकृष्ण ने विदुर के यहाँ जाकर विश्राम और भोजन किया ।

दुर्योधन के कहने पर कि महाराज धृतराष्ट्र आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं; श्रीकृष्ण विदुर को लेकर धृतराष्ट्र के महलों में गए ।

श्रीकृष्ण ने यह संधि प्रस्ताव रखा कि पांडव तुम्हें युवराज और धृतराष्ट्र को महाराज मान लेंगे लेकिन तुम उन्हें उनका आधा राज्य लौटा देंगे ।

दुर्योधन द्वारा श्रीकृष्ण के संधि प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया गया और कहा गया कि बिना युद्ध किए मैं सुई की नोक के बराबर भी भूमि नहीं दूँगा।

श्रीकृष्ण ने यह सुनते ही सभासदों से विधिवत आज्ञा ली और कुंती को सारा हाल कह सुनाया।

कुंती ने भी तत्काल ही पुत्रों की रक्षा श्रीकृष्ण से माँगी। उसी समय श्रीकृष्ण ने उपप्लव्य नगर की ओर प्रस्थान किया।